 ISSN: 2349-1876 (Print) | ISSN : 2454-1826 (Online)

टोंक रियासत के अनछुए पर्यटन स्थल

डॉ. अनिता सुराणा,

ब्याख्याता (इतिहास),

आर.एल. सहरिया, राजकीय महाविद्यालय कालाडेरा जयपुर

अपरिचित स्थानों, लोक जीवन को जानने, समझने एवं परखने की जिज्ञासा मनुष्य की स्वभावगत प्रवृति है और इस प्रवृति से ही 'पर्यटन' का आरम्भ हुआ है । स्थान विशेष पर व्यापार एवं शिक्षा का लाभ, मनोरंजन एवं पर्यावरण से सम्बंधित पूर्ण जानकारी की आकांक्षा ने पर्यटन की सोच को विस्तार दिया है । राजस्थान को सदियों से उसकी गौरव गाथा, सांस्कृतिक विरासत, तीर्थस्थलों, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं ऐतिहासिक स्थलों के कारण देश–विदेश में सराहा जाता है किन्तु सामान्यतः पर्यटन सुप्रचारित नगरीय एवं महानगरीय पर्यटन केन्द्रों तक ही सीमित रह जाता है । असली भारत तो गॉवों में बसता है अतः प्रदेश के समृद्ध सांस्कृतिक स्वरूप से परिचय के लिए आवश्यक है कि पर्यटकों को उन ग्रामीण–स्थलों का भ्रमण कराया जावे जो सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक रूप से समृद्ध किन्तु पर्यटन की दृष्टि से अनछुए है।

प्रस्तुत आलेख जयपुर से दक्षिण दिशा में लगभग 100 किमी. की दूरी पर बनास के किनारे बसे 'टोंक' क्षेत्र की पर्यटन सम्भावनाओं के विषय पर है । प्रत्येक आयाम की दृष्टि से यह जिला दुनिया के पर्यटन मानचित्र पर अपना स्थान बनाने में सक्षम है । बनास इस शहर की शानदार परम्पराओं, सांस्कृतिक धरोहरों और साहित्यिक उपलब्धियों की साक्षी रही है। टोंक के पर्यटन स्थलों के विवेचना से पूर्व टोंक के इतिहास का एक संक्षिप्त उल्लेख आवश्यक है ।

बनास व इसकी सहायक नदियों मासी, बांडी, बारी और दाई नदियों की धाटियों में हुए उत्खल्लन से पाषाण–कालीन पुरावस्तुएं प्राप्त हुई हैं । भरनी, संडेला, देवली, बथला, महुआ और टोंक से पुराकालीन औजार भी मिले है ।1 टोंक क्षेत्र में बसने वाले मूल निवासी सम्भवतः मालव थे । मालव जाति अथवा इस के एक समुदाय का राजपूताने में आगमन पंजाब के इण्डोग्रीक कब्जे के पश्चात आरम्भ हुआ। मालवों ने यहां अपनी राजधानी 'मालेवनगर' स्थापित की।2 यह टोंक से दक्षिण पूर्व में स्थित है जिसे अब नगर फोर्ट के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र में उत्खनन के दौरान मालव–सिक्के बडी संख्या में मिले हैं।3 कुषाणो के पतन के उपरांत मालवों ने अपनी शक्ति बढा ली किंतु शीघ्र ही इन्हें समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार करनी पडी।4 चन्द्रगुप्त द्वितीय एवं कुमारगुप्त के राज्य–काल में ये अर्द्धस्वाधीन रहे किंतु पांचवी शताब्दी के अंत तक हूणों के आक्रमण से यह तहस नहस हो गये थे।5

तत्पश्चात् यह क्षेत्र मेवाड के गुहिल और शाकम्भरी के चव्हाण वंश के अधीन रहा।6 वस्तुतः टोंक शहर 11वीं–12वीं शताब्दी में प्रकट हुआ। तब से ही यह अनेक राजवशों के राजा–महाराजाओं के अधीन रहा। इस दौरान यहां अनेक महत्वपूर्ण निर्माण करवाये गए। राव जोगाजी सोलंकी ने अपने पुत्र की स्मृति में माणक चौक बसाया और टोंक का किला बनवाया जो भीमगढ के नाम से प्रसिद्ध हुआ।7 कालान्तर में दीवाने खास और दीवाने आम बनाकर अमीर खान ने इस किले का नाम अमीरगढ कर दिया था। 1441 ई. में एक 'पहाडी बावडी' खुदवाई गई और राव सातलदेव ने 'चतुर्भुज तालाब' भी खुदवाया। इस तालाब के मध्य में नवाब अमीर खान के सेनापति लाल बहादुर सिंह की छतरी भी है। इसी समय एक अन्य तालाब खुदवाया गया जो आज 'कच्चा–बन्धा' के नाम से जाना जाता है।8

कभी मुगल, कभी उदयपुर, कभी जयपुर और कभी मराठों के अधीन रहे टोंक को 1817 ई. में एक

संधि के द्वारा अंग्रेजो ने पिण्डारी नेता अमीर खां को सौंप दिया।9 इस प्रकार अमीर खां टोंक रियासत के प्रथम नवाब बने ओर 1948 ई. तक उन्हीं के वंशजों के अधीन रहा।

स्पष्ट है कि 'टोंक' शहर उत्थान–पतन के अनेक मंजरों, लाव लश्कर के पडावों, स्थापत्य कला–कौशल और साहित्य के गौरवशाली पडावों से गुजरा है। इनकी विरासत और निशानियां स्थानीय जनता के लिए तो यादगार है ही, आगन्तुक पर्यटकों के लिए भी दर्शनीय है।

स्थानीय अनुसंधान के दौरान यहां हिन्दुस्तान की प्रथम मुस्लिम महिला शासक 'रजिया सुल्तान' की मजार मिली है।10 यद्यपि पुरातत्व विभाग ने अभी इसे प्रमाणिक रूप से रजिया की मजार के रूप में स्वीकार नहीं किया है किंतु ऐतिहासिक स्मारकों में रूचि रखने वाले जिज्ञासु पर्यटकों के लिए यह मजार निश्चय ही टोंक–भ्रमण का एक विशेष आकर्षण हो सकती है। 'रसिया की टेकरी' की तलहटी में बनी यह मजार धरातल से 3 मीटर उंचे चबूतरे पर बनी है। इस मजार पर बना अष्टपदी निशान और हिलाली महराब का नक्शा मध्यकालीन इमारतों से मिलता जुलता है। इस मजार से जुड़ा एक मजार और है जिसे याकूत की मजार माना जाता है। इसके तकिये पर वही निशानात हैं जो रजिया की मजार पर है।

इनके अतिरिक्त टोंक में ऐसे पर्यटन–स्थलों की एक लम्बी श्रृखंला है जो आगन्तुक पर्यटकों के लिए निश्चय ही दर्शनीय है यथा–निवाई एवं चांदसेन की पहाड़ी में श्रृंगोजी की गुफा, बनेठा की छतरियां, निवाई के गंधक–कुण्ड, बहीर व काबरा की सुरंग, बगडी का किला, कालेखान के महल, चितौडी पोल, दादाबाडी, जुडवां मंदिर मस्जिद, पीपाजी का मंदिर एवं गुफा, रियासत कालीन हवेलियों के अलंकृत दरवाजे, टोडारायसिंह की बावडियां, टोरडी सागर बांध, बीसलपुर का बांध और मंदिर आदि।

बनास नदी के किनारे बसा 'टोंक' शहर के पर्यटन स्थल कलात्मक सौन्दर्य के साथ ऐतिहासिक रूप से भी महत्वपूर्ण है। टोंक से लगभग 22 किमी की दूरी पर पूर्व दिशा में गुमानपुरा गॉव की एक चट्टान पर एक विशाल हाथी निर्मित है। लोक मान्यता के अनुसार इसका निर्माण लगभग 1200 ई. में सवाई राम सिंह ने करवाया था। इस गज के दाहिने कान पर लेख अंकित है जो आज भी पठनीय अवस्था में है। चलते हुए वाहन से देखने पर दौडता हुआ प्रतीत होता यह हाथी–भाटा पर्यटकों को आकर्षित बनने में सक्षम है।

टोंक की एक अन्य प्राचीनकालीन इमारत जो पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत महत्व की है, वह है – जामा मस्जिद । टोंक के प्रथम नवाव अमीर खान ने इसे 1246 ई. में बनवाना आरम्भ किया था जो नवाब वजीरूद्दोला के समय 1297–98 ई. में पूर्ण हुई। यह भारत की सबसे विशाल एवं सुन्दर मस्जिदों मे एक है । इसकी ऊंची चार मीनारे लम्बी दूरी से भी दिखाई देती हैं। मुगल स्थापत्य शैली में निर्मित इस मस्जिद की दीवारें सुनहरी चित्रकारी एवं मीनाकारी से सुसज्जित हैं।

रियासत का दर्जा मिलने के बाद यहां के शासकों द्वारा निर्मित मस्जिद, मन्दिरों, बावडियो, महलों, कोठियों, छतरियों, सुरंगो व उद्यानो की ऐसी श्रृखंला है जो अपने स्थापत्य कलात्मक सौन्दर्य, चित्रांकन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। टोंक शहर में बड़े कुएं के समीपस्थ 'सुनहरी कोठी' विश्व विख्यात है। 'शीश महल' के नाम से प्रसिद्ध इस कोठी की छतों एवं दीवारों पर रंगीन कांच एवं रत्नजडित सोने की बेल बूटियां और फूल अंकित है। पच्चीकारी एवं मीनाकारी का कलात्मक सौन्दर्य दर्शनीय है। अरावली श्रृखंला की टोंक स्थित पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी पर बनी 'रसिया की छतरी' बहुत दूर से ही लोगो का ध्यान आकर्षित कर लेती है। लोक कथा के अनुसार एक कायस्थ प्रेमी बिहारीलाल यहां बैठकर सदैव प्रेम गीत गाया करता था। सन् 1802 ई. में होल्कर द्वारा नियुक्त राज्यपाल अम्बाजी महाराज ने इस टेकरी का पुर्ननिर्माण करवाया। जो स्वयं प्रेम गीतों के संयोजन के लिए जाने जाते हैं।

पर्वतारोहण की व्यवस्था किए जाने पर यह स्थल पर्यटको की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि करने में सक्षम है।

टोंक शायरों और साहित्यानुरागियों का शहर रहा है। टोंक के तीसरे नवाब मोहम्मद अली खान ने 'अरबी और फारसी शौद्य संस्थान' की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यहां बडी संख्या में अरबी, फारसी और उर्दू ग्रन्थों का संग्रह है। साहित्य प्रेमी पर्यटक इस संस्थान के दर्शन से अवश्य लाभान्वित होते है।

टोंक शहर के अतिरिक्त इस जिले में सात तहसीले और दो उप तहसीले हैं जो सभी अपने इतिहास, संस्कृति, कला, धर्म और साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मालपुरा तहसील के एक कस्बे डिग्गी में विख्यात श्री कल्याणजी का मंदिर है। यहां के गढ एवं महल भव्य एवं कलात्मक है।

निश्चय ही प्रदेश की राजधानी के इतने निकट ऐतिहासिक और कलात्मक दृष्टि से समद्ध 'टोंक' पर्यटन का एक महत्वपूर्ण 'गन्तव्य' हो सकता है। आवश्यकता यह है कि इन पर्यटन केन्द्रो का समुचित संरक्षण एवं संवर्द्धन किया जावे। इसके अतिरिक्त यह भी महत्वपूर्ण है कि इन्हें सुप्रचारित कर यहां तक पर्यटकों की यात्रा एवं प्रवास को सुगम एवं यादगार बनाया जावे।

संदर्भ

1. इण्डियन आर्क्यालॉजी –ए–रिव्यू, 1958–59, पृ0 45
2. दृष्टव्य, औझा, गौरीशंकर हीराचंद, राजपूताने का इतिहास, वो.1, पृ0 2–3, जैन.के.सी.,मालवा थ्रू दि एजेज, पृ.–3–8
3. वही
4. गुप्त परमेश्वरीलाल, गुप्त साम्राज्य पृ0 263
5. चटोपाध्याय, सुधाकर, अर्ली हिस्ट्री आर्फ नोर्थ इण्डिया, पृ0 157
6. दृष्टव्य, सिंहल, हनुमान, टोंक का इतिहास, पृ0 3–4
7. वही, पृ0 7
8. वही, पृ0 8
9. इम्पीरियल गजेटियर आर्फ इण्डिया, वो. 23, 1909, पृ0 408–9
10. दृष्टव्य–सादिक अली, रजिया सुल्तान की शहादत और उसके मजार की हकीकत, जयपुर

ISSN: 2349-1876 (Print) | ISSN : 2454-1826 (Online)

सुनहरी कोठी

रसिया की टेकरी

जामा मस्जिद   बीसलपुर का बांध

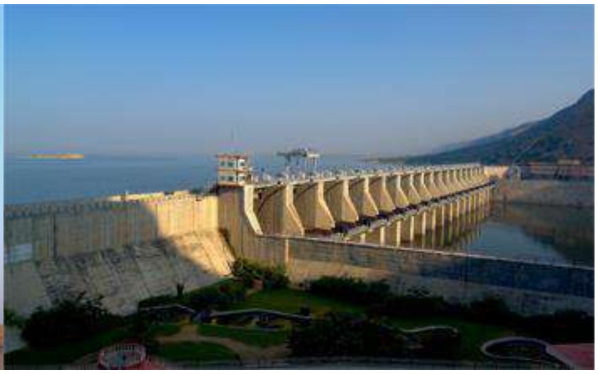

हाथी–भाटा   बीसलपुर का बांध

ईदगाह कोठी

ISSN: 2349-1876 (Print) | ISSN : 2454-1826 (Online)

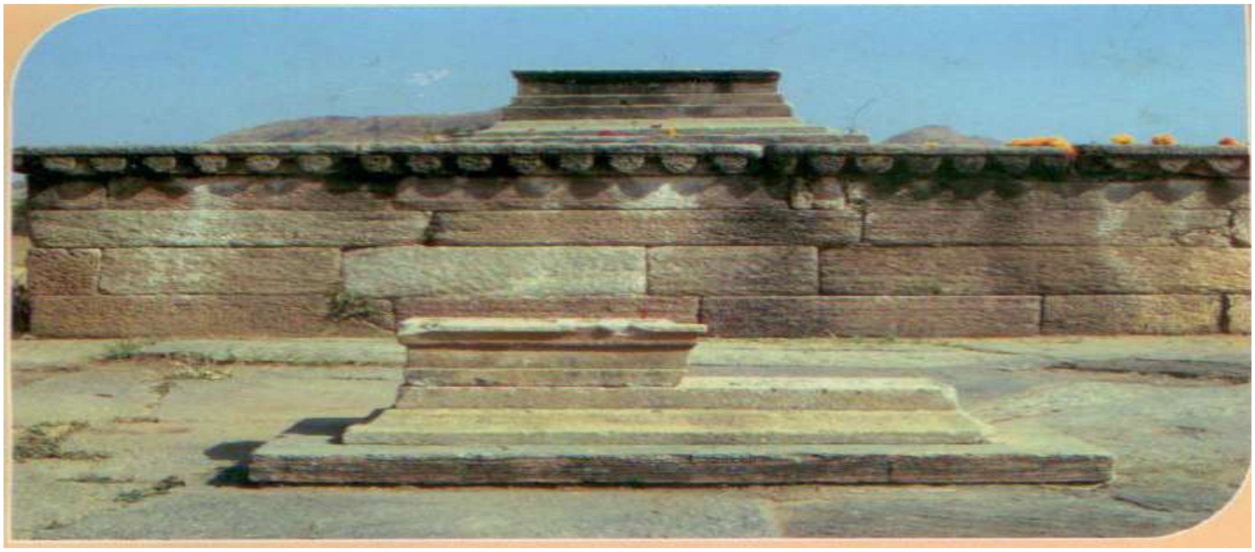

रजिया की मजार

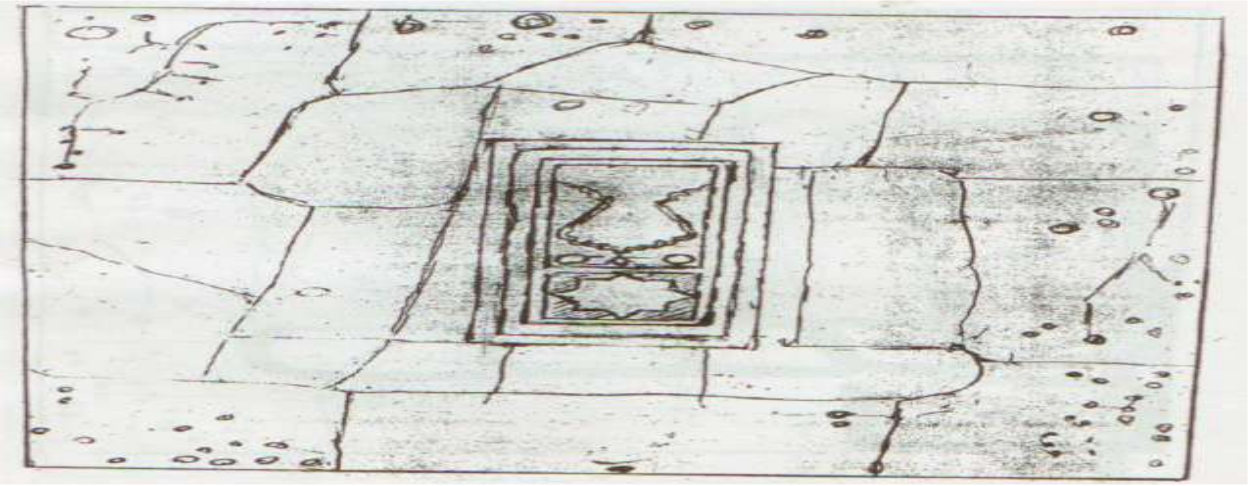

Copyright © 2016 Dr. *Anita Surana*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.